

डॉ. रॉबर्ट चिशोल्म, यशायाह के सेवक गीत, सत्र 2: प्रभु का सेवक: न्याय का चैंपियन और वाचा मध्यस्थ (बी), (यशायाह 42:1-9 [जारी] और 49:1-3)

यह डॉ. रॉबर्ट चिशोल्म और यशायाह के सेवक गीतों पर उनकी शिक्षाएँ हैं। यह सत्र 2 है, प्रभु का सेवक, न्याय का समर्थक और वाचा का मध्यस्थ, भाग ख। यशायाह 42:1-9 और यशायाह 49:1-3 का निरंतर पाठ।

तो आइए, पहले सेवक गीत का अध्ययन फिर से शुरू करें। हमने गीत के कुछ विवरणों पर गौर किया है, लेकिन अब मैं नए नियम में इस भजन या गीत की मसीहाई पूर्ति के बारे में बात करना चाहूँगा।

तो चलिए, मैं अपने नोट्स में सही जगह पर पहुँचता हूँ, और हम ऐसा करेंगे। तो आइए, यहाँ पहले सेवक गीत की मसीहाई पूर्ति देखें। आइए, लूका अध्याय 2 पद 28 में शिमोन से शुरुआत करें।

क्या आपको शिमोन याद है? वह वृद्ध भविष्यवक्ता था जिसने शिशु यीशु को अपनी गोद में लिया था, और प्रभु ने उससे कहा था कि जब तक वह प्रभु के मसीहा को आते हुए नहीं देख लेता, तब तक वह नहीं मरेगा। और उसने घोषणा की कि जब उसने उस बालक को देखा, जो अन्यजातियों के लिए प्रकाश का प्रकाश होगा, तो उसने प्रभु का उद्धार देखा। क्या यह बात आपको याद आती है? अन्यजातियों के लिए प्रकाश का प्रकाश।

मुझे लगता है कि उद्धार से जुड़े प्रकाश का ज़िक्र यशायाह अध्याय 42 के पद 6 और 7 की ओर इशारा करता है, जहाँ प्रभु का सेवक राष्ट्रों के लिए प्रकाश बनेगा। और अध्याय 49 के पद 6 में भी, यह उन दोनों भजनों या गीतों में है, और मुझे लगता है कि यह यीशु को, बचपन से ही, परमेश्वर के सेवक की भूमिका में प्रस्तुत करता है। इसलिए, मुझे लगता है कि लूका हमें यह बताकर हमारा ध्यान यीशु की ओर आकर्षित कर रहा है।

क्या आप शिमोन को सुन रहे थे? वह सेवक गीतों को जानता है, और वह देखता है कि यीशु ही वह है जो उन गीतों को पूरा करेगा। तो यह वहीं से शुरू होता है। मत्ती अध्याय 3 पद 17 और मरकुस अध्याय 1 पद 11 में यीशु का बपतिस्मा।

यीशु अपनी सार्वजनिक सेवकाई शुरू करते हैं, लेकिन वे खुद को एक विजयी राजा के रूप में प्रस्तुत नहीं करते। वे अपनी सेवकाई शुरू करते हैं और घोड़े पर सवार होने के बजाय, एक विजेता या गधे की तरह, जो राजत्व का सूचक है, बपतिस्मा लेने के लिए कतार में लग जाते हैं। वे बपतिस्मा लेने के लिए कतार में ऐसे लग जाते हैं मानो वे एक पश्चातापी पापी हों जिसे शुद्धिकरण की आवश्यकता है।

और जॉन ने विरोध किया, "मैं भी यही करूँगा। नहीं, मैं तुम्हें बपतिस्मा नहीं दूँगा। तुम्हें इसकी ज़रूरत नहीं है।"

लेकिन यीशु ने यूहन्ना से आग्रह किया कि वह उसे बपतिस्मा दे। हालाँकि यीशु निष्पाप थे, फिर भी वे यहाँ पापियों के साथ अपनी पहचान बना रहे हैं क्योंकि वे हमारे पापों को अपने ऊपर ले लेंगे। और इसलिए, जैसा कि आप जानते हैं, यह यशायाह 53 से भी संबंधित है।

यीशु पापियों के साथ अपनी पहचान रखते हैं और एक कष्ट सहने वाले सेवक के रूप में, वे मानव पाप के प्रभावों को सहने आए, मत्ती 8:17, लेकिन उन्होंने पापियों के लिए स्वयं को बलिदान के रूप में भी अर्पित किया, मत्ती 20:28, और नई वाचा की नींव रखी, मत्ती 26:28। याद रखें कि प्याला नई वाचा का प्याला है। वे कहते हैं कि उन्हें, यीशु को, सारी धार्मिकता पूरी करने के लिए बाध्य किया गया था।

और मत्ती में, धार्मिकता वह नैतिक आचरण है जो परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप है। इसलिए जब आप परमेश्वर की इच्छा पूरी करते हैं, जब आप परमेश्वर और उसके नैतिक निर्देशों का पालन करते हैं, तो आप धार्मिकता का पालन कर रहे होते हैं। और यह परमेश्वर की इच्छा थी कि यीशु इस प्रकार पापियों के साथ अपनी पहचान बनाए, जो इस बात का पूर्वाभास देता है कि अंतिम छुटकारे का बलिदान क्या होगा।

और इस प्रकार वह अपनी सार्वजनिक सेवकाई का उद्घाटन ठीक इसी प्रकार करता है। यीशु का बपतिस्मा उसकी सेवकाई का पहला चरण था, जिसका सारांश उसने बाद में इस प्रकार दिया, "मनुष्य का पुत्र सेवा कराने नहीं, बल्कि सेवा करने और बहुतों की छुड़ौती के रूप में अपना जीवन देने आया है।" लेकिन जैसे-जैसे बपतिस्मा आगे बढ़ रहा है, ठीक है, तो मैंने अभी जो कहा वह शायद चौथे सेवक गीत से ज़्यादा संबंधित है।

यीशु कहते हैं, पापियों के साथ अपनी पहचान रखते हुए, लेकिन परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के लिए यीशु की प्रतिबद्धता परमेश्वर को प्रसन्न करती थी। और इसलिए जैसे ही यीशु पानी से बाहर आते हैं, आत्मा उन पर उतरती है, कबूतर की तरह तेज़ी से नीचे उतरती है। यह मत्ती 3:16 है। और फिर हमारे पास यशायाह 40 से प्रभु के वचन हैं।

यह प्रभु के वचनों को याद दिलाता है। आत्मा उस पर उतरेगा। और तब परमेश्वर इस प्रकार यीशु की पहचान कराता है।

यह मेरा पुत्र है, जिससे मैं प्रेम करता हूँ। मैं उससे बहुत प्रसन्न हूँ। यह भजन संहिता 2.7 का संयोजन है, जहाँ वह दाऊदवंशीय राजा को अपना पुत्र घोषित करता है, और पहले सेवक गीत, यशायाह 42.1 का पहला पद, जहाँ वह अपने आत्मा-प्रदत्त सेवक में अपनी प्रसन्नता की घोषणा करता है।

तो आत्मा उतरती है, यशायाह 42.1, मैं अपनी आत्मा उस पर डालूँगा। और फिर वह सेवक के बारे में बात करता है, वह अपने सेवक से बहुत प्रसन्न है, और वह यहाँ यही कहता है। तो यह एक

ही कथन यीशु को मसीहाई राजा के रूप में, और साथ ही उसके विशेष सेवक के रूप में भी पहचानता है जो उसकी इच्छा पूरी करेगा और पापियों को बचाने के लिए कष्ट सहेगा।

तो यहाँ सेवक और राजत्व के विषयों को एक साथ जोड़ा गया है। मत्ती में कुछ अन्य पाठ भी हैं जो इस बारे में जानकारी देते हैं। तो उम्मीद है कि आप देख रहे होंगे कि जब यीशु आते हैं, तो शुरुआत से ही पहला सेवक गीत बजने लगता है।

अगर आप इससे परिचित हैं, तो आप सोच रहे होंगे, आह, यहाँ बिंदुओं को जोड़ो। आत्मा उस पर उतरी, और प्रभु ने घोषणा की कि वह उससे बहुत प्रसन्न है, और वह इसे भजन 2, शाही, से जोड़ रहा है। यह एक शाही भजन है।

तो राजत्व और सेवकत्व एक साथ आ रहे हैं। और फिर मत्ती अध्याय 4, पद 23 से 25 में यीशु की प्रारंभिक चंगाई सेवकाई। मत्ती के अनुसार, यीशु की यह घोषणा कि राज्य निकट है, उसके साथ उनकी मसीहाई शक्ति का प्रदर्शन भी था।

उन्होंने हर तरह की बीमारी और व्याधि को ठीक करके प्रकृति पर अपनी शक्ति का प्रदर्शन किया, जिन्हें अक्सर नए नियम में शैतान की ओर से माना जाता है। मुझे नहीं लगता कि हमें यह कहना चाहिए कि हर बीमारी और व्याधि शैतान की ओर से है, लेकिन अंततः, बीमारी और व्याधि सामान्य अर्थों में पाप का ही परिणाम हैं। हम बीमार पड़ते हैं, मरते हैं, क्योंकि हम पापी हैं।

मानव जाति का हिस्सा हैं। इससे बच नहीं सकते। उन्होंने दुष्टात्माओं से ग्रस्त लोगों को ठीक करके शैतान के खिलाफ अपनी विजयी आध्यात्मिक लड़ाई जारी रखी।

ज़ाहिर है कि वे शैतान द्वारा सताए जा रहे थे। और यह उनकी मसीहाई शक्ति और उनके अधिकार को दर्शाता है। लेकिन वे पीड़ित सेवक के रूप में अपनी भूमिका कभी नहीं छोड़ते।

और आपको याद होगा, जब आप नए नियम को पढ़ते हैं, तो एक ऐसे मसीहा की उम्मीद की जाती थी जो रोम से लोगों को मुक्ति दिलाएगा। वह आकर लोगों को मुक्ति दिलाएगा, ठीक वैसे ही जैसे पहले मक्काबियों ने किया था। और इसलिए उन्होंने मसीहा को एक सैन्य योद्धा के रूप में कुछ हद तक उजागर किया, यशायाह 9। अपनी चंगाई सेवा के माध्यम से, यीशु पापियों की भयानक दुर्दशा में उनकी पहचान कर रहे हैं।

वह दिखा रहा है कि वह शत्रु को परास्त करने में सक्षम है, लेकिन वह उनके साथ अपनी पहचान इसलिए बना रहा है क्योंकि शारीरिक रोग अंततः पाप का ही एक परिणाम है। इसलिए जिन लोगों को उसने चंगा किया, उनके जीवन से पाप के प्रभावों को मिटाकर, यीशु ने उस दिन का पूर्वाभास कराया जब वह इस मरहम-पट्टी से आगे बढ़कर मूल समस्या का हमेशा के लिए समाधान कर देगा। लेकिन फिर क्या होता है? उसकी सेवकाई की खबर दूर-दूर तक फैलने लगती है।

मत्ती 4:24 और 25 के अनुसार, लोग उसके कार्यों के बारे में सुन रहे हैं, यहाँ तक कि सीरिया और दिकापुलिस जैसे दो क्षेत्रों में भी जहाँ अन्यजाति रहते थे। तो इस बिंदु पर, पहला सेवक गीत शुरू हो रहा है। यीशु पापियों के साथ अपनी पहचान बना रहे हैं।

यह यशायाह 53 जैसा ही है, और हम वहाँ पहुँचेंगे। लेकिन यीशु का संदेश पहले ही फैल चुका है, और अन्यजातियों को उसका ज्ञान हो रहा है, और वह राष्ट्रों के लिए प्रकाश बनना शुरू कर चुका है। वह यशायाह 42:6 में वर्णित राष्ट्रों तक उद्धार का प्रकाश पहुँचा रहा है। और यह उसके शिष्यों को दिए गए उसके अंतिम आदेश का पूर्वाभास होगा।

और वह क्या है? सभी राष्ट्रों के लोगों को चेला बनाओ। और इस दौरान, यीशु यह स्पष्ट करते हैं कि अन्यजातियों को बहिष्कृत नहीं किया जाएगा। स्त्रियों को भी बहिष्कृत नहीं किया जाएगा।

बच्चों को बहिष्कृत नहीं किया जाएगा। गैर-यहूदियों को बहिष्कृत नहीं किया जाएगा। वे सभी लोग जिन्हें दोयम दर्जे का समझा जाता है, अपनी संस्कृति में थोड़े कमतर हो सकते हैं।

इन नोट्स में, जिन पर मैं काम कर रहा हूँ, मैं आगे लूका 4 में नासरत के आराधनालय में यीशु के उद्घोषणा के बारे में बात करता हूँ, जहाँ वे यशायाह 61 का उद्धरण देते हैं। और आमतौर पर, यशायाह 61 को सेवक गीतों में शामिल नहीं किया जाता। और मुझे लगता है कि इसकी एक वजह यह है कि उन्होंने 40 से 55 को 56 से 66 तक अलग कर दिया है।

और विद्वान कहेंगे, यार, 61 तो पहले दो सेवक गीतों जैसा ही लगता है। लेकिन यह सेवक गीत नहीं हो सकता, क्योंकि यह एक भविष्यवक्ता जैसा है, और वे इसका शाही पहलू भूल रहे हैं। मैं अपने अध्ययन के अंत में, चौथे व्याख्यान के अंत में, यशायाह 61 के बारे में बात करना चाहूँगा।

और इसलिए मैं इस पर विस्तार से नहीं बताऊँगा। लेकिन जब यीशु, यह कहने के अलावा कि जब यीशु आराधनालय में जाते हैं और खुद को 61 में वर्णित व्यक्ति के रूप में पहचानते हैं, तो पवित्र आत्मा मुझ पर गरीबों को सुसमाचार सुनाने और उत्पीड़ितों को मुक्ति दिलाने वगैरह के लिए उतरता है, वह खुद को सेवक के रूप में पहचान रहे हैं, क्योंकि यशायाह 61, 42, 49, और यशायाह 11, ये सभी एक साथ आते हैं। और मैं यशायाह 61 के बारे में संक्षेप में बात करना चाहता हूँ, हालाँकि वहाँ सेवक शब्द का प्रयोग नहीं किया गया है, बिंदुओं को जोड़ें।

तो हम इस चर्चा को थोड़ी देर बाद के लिए रखेंगे। मत्ती अध्याय 12, पद 15 से 21 में यीशु का सार्वजनिक सेवकाई से पीछे हटना। वह जानता है कि उसका समय अभी नहीं आया है।

उसे अभी बहुत कुछ करना बाकी है, इसलिए मत्ती अध्याय 12 में उत्पीड़न के सामने वह पीछे हट जाता है। और वह अपने अनुयायियों को चंगा करना जारी रखता है। वह उन्हें मना नहीं करता, बल्कि उन्हें चेतावनी देता है कि वे इस बात का प्रचार न करें।

अब, कभी-कभी वे इसे मसीहाई रहस्य या कुछ और कहते हैं, लेकिन ऐसा लगता है कि वह खुद का प्रचार नहीं कर रहा है। अगर वह मसीहा है और वह आ चुका है और वह वही है जो वह खुद

का दावा करता है, तो आप सोचेंगे कि वह खुद का प्रचार कर रहा होगा। खैर, फर्स्ट सर्वेंट सॉन्ग कहता है कि वह ऐसा नहीं करने वाला है।

वह खुद का प्रचार नहीं करेंगे। वह टूटे हुए लोगों के लिए, उन लोगों के लिए गहरी चिंता दिखाएंगे जो तैयार हैं, आप जानते हैं, उस बुझ चुकी बाती के लिए जो बुझने को तैयार है। वह उन लोगों की ज़रूरतों के लिए गहरी करुणा दिखाएंगे जिनका ज़िक्र ये रूपक कर रहे हैं।

लेकिन साथ ही, वह आत्म-प्रशंसा नहीं करेगा। वह खुद को एक विजेता राजा के रूप में प्रचारित नहीं करेगा। इसके बजाय, वह कमज़ोर और पीड़ित लोगों को कुचलने और उन पर अत्याचार न करने का ध्यान रखेगा, क्योंकि उसका अंतिम कार्य दुनिया में मुक्ति का प्रकाश लाना और एक न्यायपूर्ण समाज की स्थापना करना है।

और ऐसा होने के लिए, उसे एक कष्ट सहने वाला सेवक बनना होगा। उसे एक कष्ट सहने वाला सेवक बनना होगा। यीशु का रूपांतरण, मत्ती अध्याय 17, पद 1 से 9 तक। यह लूका अध्याय 9, पद 28 से 36 तक में भी है।

यीशु द्वारा यह घोषणा करने के कुछ ही समय बाद कि उनके कुछ शिष्य अपनी मृत्यु से पहले उनके दूसरे आगमन के साक्षी बनेंगे, वे पतरस, याकूब और यूहन्ना को अपने साथ एक ऊँचे पहाड़ पर ले गए। बहुत से लोग इस अंश को समझने में उलझन में हैं। उन्होंने यह सब पहले नहीं देखा था, इसलिए वे भ्रमित हो जाते हैं।

नहीं, यीशु सचमुच दूसरे आगमन की बात नहीं कर रहे हैं। वे उसका पूर्वावलोकन देखेंगे, और यीशु उनके सामने रूपांतरित होंगे। और इस प्रकार वे उस यीशु को देखेंगे जो अपने आगमन पर स्वयं प्रकट होंगे।

उन्होंने कहा था, उनमें से कुछ, और यह हो रहा है। यह ठीक उसके बाद हुआ जब उन्होंने कहा था कि वे ऐसा करेंगे, और फिर यह हुआ। यह उनके कहे अनुसार ही होना चाहिए।

यही तो वह बात कह रहा है। और इसलिए परमेश्वर बादल में आया, और उसने घोषणा की, ठीक जैसे उसने यीशु के बपतिस्मा के समय की थी, कि यीशु उसका पुत्र है जिससे वह बहुत प्रसन्न है। इसलिए उसने बपतिस्मा के समय भी यही कहा, अब वह रूपांतरण के समय भी यही कह रहा है, और एक बार फिर, यही भजन संहिता 2:7 में है, जहाँ यीशु परमेश्वर का पुत्र है, वह दाऊदवंश का राजा है, और 42:1 में, जहाँ वह आत्मा से संपन्न सेवक में अपनी प्रसन्नता की घोषणा करता है।

तो परमेश्वर फिर से यीशु को मसीहाई राजा के रूप में पहचान रहे हैं, और सेवक भजनों में उन्हें सेवक के रूप में भी पहचान रहे हैं। देखिए कैसे वह राजत्व, राजत्व और सेवकत्व को एक साथ ला रहे हैं, और पहला गीत ठीक यही कर रहा है। लूका का संस्करण थोड़ा अलग है।

लूका के वृत्तांत में, परमेश्वर कहते हैं, "यह मेरा पुत्र है जिसे मैंने चुना है," लूका 9:35। अब, लूका की कुछ पांडुलिपियाँ मत्ती के पाठ से मेल खाती हैं, जिससे मैं बहुत प्रसन्न हूँ, लेकिन आमतौर पर जब ऐसा होता है, तो हम उन पांडुलिपियों को चुनते हैं जो अलग हैं, क्योंकि यह समझा जाता है

कि, कुछ लोग जो लूका की सामग्री को लिख रहे थे, वे मत्ती की कही बातों से प्रभावित थे, और इसलिए मुझे लगता है कि आप अलग पाठ के मूल होने का एक अच्छा तर्क दे सकते हैं। लेकिन यह अभी भी यशायाह 42:1 है, क्योंकि यशायाह 42:1 में, प्रभु सेवक को, मेरे चुने हुए को, बुलाते हैं।

वह चुनी हुई भाषा का इस्तेमाल करता है। वह "wellplested" इस्तेमाल करता है, और वह "chosened" भी कहता है। मत्ती संस्करण एक को चुनता है, लूका संस्करण दूसरे को।

ऐसा नहीं है कि... यीशु ने दोनों कहा, मेरा मतलब है, या परमेश्वर ने जब इसकी घोषणा की तो दोनों कहा। आपको बस उन्हें एक साथ रखना है। मत्ती ने एक चयन दिया, और लूका ने भी यही बात कही, एक अलग चयन, लेकिन दोनों ही बताए गए थे, और इसलिए उम्मीद है कि आप देखेंगे कि नए नियम में पहला सेवक गीत स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

पहला गीत जिसमें प्रभु न्याय के रक्षक और आदर्श राजा के रूप में सेवक के मिशन के बारे में बात करते हैं। ये पूरे सुसमाचारों में मौजूद हैं। तो, मुझे लगता है कि अब हम यशायाह अध्याय 49 के दूसरे भाग में अगले सेवक गीत की ओर बढ़ने के लिए तैयार हैं।

ठीक है, तो चलिए वहाँ चलते हैं। क्या आप अपनी बाइबल लेना चाहते हैं? चलिए अध्याय 49 पर चलते हैं, और अध्याय 49 में, गीत श्लोक 13 तक जाता है, और जैसा कि मैंने पहले कहा, इसमें काफ़ी समानताएँ होंगी। कुछ भाषा बिल्कुल वैसी ही होगी जैसी हम पहले सेवक गीत में देखते हैं।

तो, ये दोनों एक साथ चलते हैं, और दूसरा कई मायनों में हमें की पहचान और भाषा के कुछ अर्थों के बारे में जानकारी देगा। तो, चलिए 49 पर चलते हैं, और मैं वहीं से पढ़ना शुरू करूँगा। यह 49.1 है, लेकिन मुझे अभी कुछ याद आया।

मैं उस उम्र में पहुँच रहा हूँ जहाँ मुझे हमेशा वो सब याद नहीं रहता जो मैं कवर करना चाहता था। ये बहुत ज़रूरी है। पहला सेवक गीत, अध्याय 42, और फिर आप सात अध्यायों से होते हुए अध्याय 49 पर पहुँचते हैं, और फिर तीसरा गीत अध्याय 50 में आता है, और फिर चौथा गीत तेज़ी से अध्याय 52-53 में आता है।

देरी क्यों? अगर आप बीच की सामग्री पर गौर करें, तो अंदाज़ा लगाइए कि किसका ज़िक्र किया गया है? कुसू। कुसू, जिसका ज़िक्र हमने किया था। तो, याद कीजिए, अध्याय 41 में प्रभु ने अपनी योजना को आगे बढ़ाने के लिए अपने उद्धारक, कुसू के बारे में बात की थी।

वह लोगों को निर्वासन से वापस लाएगा, और फिर वह सेवक के बारे में बात करता है, और हमने तर्क दिया कि सेवक कुसू से अलग है क्योंकि कुसू को एक विजेता के रूप में दर्शाया गया है। सेवक को उस तरह से चित्रित नहीं किया गया है, और फिर हम दूसरे गीत पर आते हैं, और वह वास्तव में सेवक को इस्राएल कहता है, और इस तरह यह बात पक्की हो जाती है। तो, पैटर्न समझ में आया? आपने देखा, हम कुसू के बारे में बात करते हैं, एक ज़्यादा तात्कालिक घटना जो

परमेश्वर के अपने लोगों के लिए छुटकारे के कार्यक्रम को गति प्रदान करेगी, और फिर हम उस सेवक के बारे में बात करते हैं जो इसे फलित और परिणति तक पहुँचाएगा।

और अब, भविष्यवक्ताओं की विशिष्ट शैली के अनुसार, हम कुसू पर अपनी चर्चा का विस्तार करने जा रहे हैं, और यह वास्तव में 44 और 45 में चरम पर पहुँचती है, जहाँ कोरेश आता है, और वह लोगों को निर्वासन से छुड़ाने के लिए ज़िम्मेदार है। लेकिन इससे वह महान दर्शन साकार नहीं हुआ जो हम यशायाह की भविष्यवाणी में देखते हैं। यह तो बस शुरुआत थी।

तो, उस व्यक्ति, कुसू के बारे में बात करने के बाद, अब वह अपने दूसरे उद्धारक की बात करते हैं, जो इस सब को पराकाष्ठा तक पहुँचाएगा, और इसीलिए अब ध्यान सेवक पर है। तो, कुसू का वर्णन कीजिए, सेवक का वर्णन कीजिए। कुसू का और विस्तार से वर्णन कीजिए, और सेवक का और विस्तार से वर्णन कीजिए।

पैटर्न समझ रहे हो? इसीलिए हमारे यहाँ थोड़ा सा अंतराल था। तो, अध्याय 49, पद 1, हे समुद्रतटों, मेरी बात सुनो। हे दूर-दूर रहने वालों, ध्यान दो।

ये नौकर बोल रहा है। वो बात कर रहा है, और ध्यान दें कि वह इस बात से वाकिफ है कि तटीय क्षेत्र और दूर-दराज़ के लोग उसकी सेवा से प्रभावित होंगे। हम इसके बारे में अध्याय 42 में पहले ही सुन चुके हैं।

परमेश्वर इस सेवक के ज़रिए कुछ ऐसा करना चाहता है जिसका असर राष्ट्रों पर पड़े। प्रभु ने मुझे जन्म से ही बुलाया था। जब मेरी माँ ने मुझे इस दुनिया में लाया था, तब उन्होंने मुझे यह ज़िम्मेदारी सौंपी थी।

तो, यह बिल्कुल शुरुआत से ही चलता है। मुझे लगता है कि उन्होंने इस दुनिया में प्रवेश किया, यह कहने का एक तरीका है कि उन्होंने एक ही उद्देश्य को ध्यान में रखकर प्रवेश किया, प्रभु का सेवक बनने के लिए। पद 2 से ऐसा लगता है जैसे वह किसी प्रकार का सैन्य व्यक्ति बनने जा रहे हैं।

उसने मेरे मुँह को तेज़ तलवार जैसा बनाया। ध्यान दीजिए, उसने मेरे मुँह को तेज़ तलवार जैसा बनाया। उसने मुझे अपनी हथेली की खोखली हथेली में छिपा लिया।

उसने मुझे एक तेज़ तीर की तरह बनाया। उसने मुझे अपने तरकश में छिपा लिया। तो फिर, यहाँ क्या हो रहा है? उसने मुझसे कहा, " हे इस्राएल, तू मेरा सेवक है, मैं तेरे द्वारा अपनी महिमा प्रकट करूँगा।"

तो, कुछ लोग इसे देखकर कहेंगे, "देखो, प्रभु के सेवक का एक सैन्य पहलू है, और यह सच है। मसीहा एक शक्तिशाली योद्धा के रूप में आएगा, और इसका चित्रण प्रकाशितवाक्य में किया गया है। यीशु स्वर्ग से घुड़सवारी करते हुए आएंगे, और उनके मुँह से तलवार निकलेगी, लेकिन मुझे नहीं लगता कि सेवक गीत में इस पर ज़ोर दिया गया है।"

वह एक योद्धा है, लेकिन सेवक गीत पापियों के साथ अपनी पहचान और विनम्रता, और वंचितों, उत्पीड़ितों के प्रति उसकी सेवा, और उसके द्वारा सहे जाने वाले कष्टों पर ज़्यादा केंद्रित हैं। इसलिए, हालाँकि मुझे लगता है कि नया नियम इसी चित्रण को अपनाता है, मुझे लगता है कि आप कह सकते हैं, उसने मेरे मुँह को एक तेज़ तलवार की तरह बनाया, और उसने मुझे एक तेज़ तीर की तरह बनाया। मुझे लगता है कि वह कह रहा है, मैं प्रभु का प्रवक्ता बनूँगा।

यहीं पर भविष्यवाणी का पहलू सामने आता है। वह न सिर्फ़ एक राजा है, बल्कि एक भविष्यवक्ता भी है, और मुझे नहीं लगता कि हमें इस झूठे द्वैतवाद में पड़ना चाहिए। नहीं, आपको एक चुनना होगा।

या तो वह राजा है या फिर भविष्यवक्ता। नहीं, नहीं, नहीं। यह सेवक कई भूमिकाएँ निभाता है, और वह प्रभु का प्रवक्ता भी होगा।

वह प्रभु का भविष्यवक्ता होगा। उसके पास एक भविष्यसूचक वचन होगा, और वह वचन बहुत प्रभावशाली और शक्तिशाली होगा, ठीक वैसे ही जैसे किसी योद्धा के हाथ में तलवार या तीर होता है। तो, यह एक तुलना मात्र है, जैसे ये हथियार एक कुशल योद्धा के हाथों में प्रभावशाली होते हैं, वैसे ही सेवक के वचन भी प्रभावशाली और शक्तिशाली होंगे क्योंकि प्रभु उसके माध्यम से बोलेंगे।

मुझे लगता है कि यहाँ यही बात कही गई है। यह बस उसे एक शक्तिशाली भविष्यवक्ता के रूप में चित्रित कर रहा है। बेशक, जब भविष्यवक्ता न्याय की घोषणा करते हैं, तो न्याय अवश्य होगा।

उनके शब्द विनाशकारी हो सकते हैं, लेकिन इस पर बहुत से लोग बहस करते हैं। आपको सिखाते समय इस बात पर गहराई से सोचना होगा। फिर उसने मुझसे कहा, "तू मेरा सेवक इस्राएल है, जिसके द्वारा मैं अपना तेज प्रकट करूँगा।"

और कुछ लोग इसे देखकर कहेंगे, देखो, यह इज़राइल है। इज़राइल सेवक है। लेकिन ध्यान दें कि इसमें जैकब नहीं लिखा है, और मैं तर्क दे रहा हूँ कि इस भाग में, जहाँ निर्वासित इज़राइल लिखा है, वहाँ हमेशा जैकब, इज़राइल लिखा है, जैसा कि हम देखेंगे।

लेकिन मैंने सोचा, मैंने खुद से कहा, मैंने व्यर्थ ही मेहनत की है। मैंने अपनी ऊर्जा बिल्कुल बेकार में खर्च की है, लेकिन प्रभु मुझे सही साबित करेंगे। मेरा ईश्वर मुझे इनाम देगा।

ये अजीब है। लगता है वो शायद विरोध की बात कर रहे हैं, शायद किसी तकलीफ़ की भी। मैंने बहुत मेहनत की है, लेकिन अभी तक कोई नतीजा नहीं दिख रहा।

लेकिन मुझे पता है कि प्रभु मुझे निर्दोष ठहराएँगे, और मेरा परमेश्वर मुझे प्रतिफल देगा। इसलिए मुझे लगता है कि यह एक और संकेत है क्योंकि हम चौथे गीत में पीड़ित सेवक की छवि की ओर बढ़ रहे हैं। यह एक संकेत है कि कुछ विरोध होने वाला है, और हो सकता है कि हमें सेवक के काम से तुरंत परिणाम न मिलें।

तो अब प्रभु कहते हैं, जिसने मुझे जन्म से ही अपना सेवक बनाकर रचा, पद 5 में, यह सचमुच महत्वपूर्ण है, उसने याकूब को अपने पास वापस लाने के लिए ऐसा किया ताकि इस्राएल उसके पास इकट्ठा हो सके। और मैं प्रभु की दृष्टि में आदर पाऊँगा, क्योंकि मेरा परमेश्वर मेरा स्रोत और मेरा बल है। इसलिए मैंने अपने अवलोकन में इसका उल्लेख किया है।

अब हम थोड़ा और विस्तार से देखेंगे। हम्म। उसने मुझे जन्म से ही अपना सेवक बनाया है, और मैं इस्राएल के रूप में पहचाना जाता हूँ।

मेरा काम याकूब को वापस लाना है, और मेरा काम इस्राएल को परमेश्वर के पास वापस लाना है। इसलिए लोगों ने यहाँ इब्रानी व्याकरण के साथ कुछ अजीबोगरीब चीज़ें करने की कोशिश की है, और अगर आप मेरे द्वारा लिखी गई कुछ चीज़ों को देखना चाहें, तो मैंने उन सभी पर बहुत विस्तार से चर्चा की है। लेकिन हम इस तरह की प्रस्तुति में इन सब पर बात नहीं कर सकते।

यह बहुत तकनीकी है। लेकिन नहीं, यह पाठ में कही गई बात का एक अच्छा अनुवाद है। तो सेवक इस्राएल, याकूब इस्राएल को पुनर्स्थापित करने जा रहा है, और हम इस खंड के पिछले पाठों से जानते हैं कि याकूब इस्राएल ही निर्वासित इस्राएल है।

और उन्हें निर्वासित क्यों किया गया है? क्योंकि वे बहरे और अंधे हैं। वे आध्यात्मिक रूप से असंवेदनशील हैं, और उन्होंने प्रभु की आज्ञा नहीं मानी है, और उन्होंने इसकी सज़ा भुगती है, और वे खुद को निर्वासन में पाते हैं क्योंकि वाचा के श्राप उन पर आ पड़े हैं। उन्हें मुक्ति की ज़रूरत है।

उन्हें पुनर्स्थापित करने की आवश्यकता है। और इसलिए सेवक का काम यही है, उन्हें वापस लाना। इसलिए जब यीशु सेवक के रूप में आते हैं, तो याकूब और इस्राएल के लिए उनका संदेश पश्चाताप का होता है।

और जब वह खुद यूहन्ना के पास जाकर बपतिस्मा लेता है, तो वह खुद भी यही करता है। वह एक इस्राएली के रूप में खुद को उनके साथ जोड़ रहा है, और कह रहा है, "तुम्हें वही करना होगा जो मैंने किया ... मैं तुम्हारे पापों में तुम्हारे साथ जुड़ रहा हूँ।"

मैं तुम्हारे पाप की समस्या का समाधान करूँगा, लेकिन तुम्हें पश्चाताप करना होगा। इसलिए यीशु का पूरा मिशन न केवल परमेश्वर के उद्धार को राष्ट्रों तक पहुँचाना है, बल्कि अब हम याकूब और इस्राएल पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं, और प्रभु का कार्य उन्हें वापस लाना है। इसलिए आपके मन में यीशु को आदर्श इस्राएल मानने की धारणा है, और मुझे इसे सावधानी से कहना होगा क्योंकि मुझे नहीं लगता कि परमेश्वर इस्राएल की जगह यीशु को ला रहे हैं।

मैं प्रतिस्थापन धर्मशास्त्र की वकालत नहीं कर रहा हूँ, लेकिन एक अर्थ में यीशु ने वही किया जो परमेश्वर का शुरू से इरादा था, जहाँ राष्ट्र असफल रहा। तो मत्ती के बारे में सोचिए। आप इसे मत्ती में सबसे पहले देख सकते हैं।

यीशु एक बच्चे के रूप में मिस्र जाते हैं। प्रभु अपनी कृपा से वहाँ सब कुछ रचते हैं। आप जानते हैं, हेरोदेस बेथलहम के सभी बच्चों को मार डालना चाहता है, ताकि वे मिस्र भाग जाएँ।

और फिर मत्ती कहता है, " यह इसलिए हुआ ताकि होशे के ये शब्द पूरे हों, 'मैंने अपने पुत्र को मिस्र से बुलाया।' लेकिन अगर आप होशे की किताब देखें, तो वहाँ लिखा है, 'मैंने अपने पुत्र को मिस्र से बुलाया है,' और जितना ज़्यादा मैंने उन्हें बुलाया, उतना ही ज़्यादा वे मूर्तियों और बाल देवताओं के पीछे भागे।' तो मुझे लगता है कि होशे मूल पलायन की बात कर रहे हैं।

मिस्र से बाहर मैंने अपने बेटे को बुलाया, और फिर वह बताता है कि उसके बाद क्या हुआ, और उन्हें मूर्तियों और बाल देवताओं का पीछा करने में ज़्यादा समय नहीं लगा, खासकर जब वे उस देश में पहुँचे। तो, यह मसीहाई कैसे है, और यह भविष्यवाणी कैसी है? वह बता रहा है कि क्या हुआ है। खैर, यहाँ टाइपोलॉजी चल रही है।

पूर्ति का मतलब हमेशा यह नहीं होता कि परमेश्वर कोई भविष्यवाणी करता है और फिर वह पूरी हो जाती है। हम इसे प्रत्यक्ष पूर्ति कहते हैं। कभी-कभी, ऐसा होता है कि पुराने नियम के वचन और भी पूर्ण अर्थ में पूरे हो जाते हैं।

और जब यीशु मिस्र से बाहर आते हैं, तो मुझे लगता है कि प्रभु कह रहे हैं कि आदर्श इस्राएल यहाँ है, और वह असफल नहीं होगा। इस्राएल जंगल में असफल हो गया। यीशु जंगल में असफल नहीं हुए।

याद कीजिए, उनका सामना शैतान से हुआ था, और शैतान ने उन्हें सचमुच अपने मिशन को त्यागने, दुख के आयाम को दरकिनार करने के लिए प्रलोभित किया था। अरे, अगर तुम मेरी बात मानो, तो तुम अभी मेरे अधीन राजा बन सकते हो, और यीशु ने वह लड़ाई जीत ली, और पूरे समय व्यवस्थाविवरण का हवाला दिया। डीटीएस में मेरे एक सहकर्मी, स्वर्गीय हॉवर्ड हेंड्रिक्स, इस प्रलोभन के बारे में बात करते हुए अक्सर कहा करते थे, " अगर तुम्हारे पास सिर्फ व्यवस्थाविवरण की किताब होती, तो तुम शैतान के खिलाफ कितना अच्छा प्रदर्शन करते?" यीशु ने बिलकुल सही किया।

वह यह जानता था। वह यह जानता था। और दिलचस्प बात यह है कि व्यवस्थाविवरण से उसने जो अंश उद्धृत किए हैं, वे सभी जंगल में उनकी असफलता के संदर्भ में हैं।

तो हमारे सामने एक असफल इस्राएल, एक अवज्ञाकारी परमेश्वर, और दूसरी ओर, आदर्श इस्राएल है। और मुझे लगता है कि मत्ती के मन में यह दूसरा सेवक गीत है, हालाँकि वह इसे सीधे उद्धृत नहीं करता। आदर्श इस्राएल, जो परमेश्वर की आज्ञा मानता है और जंगल में सफल होता है, यह सिद्ध करता है कि वह परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा करेगा।

याद कीजिए, व्यवस्थाविवरण 4 में, परमेश्वर इस्राएल के माध्यम से राष्ट्रों पर प्रभाव डालना चाहता था। तुम व्यवस्था का पालन करोगे, और राष्ट्र तुम्हारी ओर देखेंगे, और कहेंगे, क्या? बुद्धिमान लोगों के पास बुद्धिमान नियम हैं, और वे जानना चाहेंगे कि आप ऐसा कैसे कर पाए। और फिर आप उनके सामने यहोवा के बारे में गवाही दे सकते हैं।

इसराइल, उन्होंने इसे बर्बाद कर दिया। उन्होंने वह हासिल नहीं किया। सेवक करेगा।

वह परमेश्वर के उद्धार और संदेश को राष्ट्रों तक पहुँचाएगा। तो मुझे लगता है कि यही यहाँ हो रहा है, लेकिन उसे पहले याकूब और इस्राएल को छुड़ाना होगा। उसे उन्हें छुड़ाना होगा।

वह कहता है, " क्या मेरे सेवक बनकर याकूब के गोत्रों को पुनर्स्थापित करना और इस्राएल के बचे हुए लोगों को पुनर्स्थापित करना तुम्हारे लिए बहुत बड़ा काम है?" फिर से वही। यही उसका काम है। इसलिए वह निर्वासित इस्राएल से अलग है।

एक ज्योति बनाऊँगा राष्ट्रों के लिए। ठीक है, यह पहले भजन में था।

उद्धार पहुँचा सको। अगर तुम सोचते हो कि सिर्फ इस्राएल की सेवा करना बहुत छोटा काम है, तो तुम सभी राष्ट्रों की सेवा करोगे। और यह बात पहले भजन में पहले ही कही जा चुकी है।

तो अब यहाँ व्यापक मिशन संकुचित हो रहा है। और फिर श्लोक 7 में, इस्राएल का रक्षक, उनका पवित्र परमेश्वर, उस सेवक से यही कहता है जो, बहुत ही रोचक बात है, उस सेवक से बात कर रहा है जिसे राष्ट्रों ने तुच्छ और अस्वीकार किया है, जो शासकों का सेवक है। परन्तु राजा देखेंगे और आदर से भर जाएँगे।

इस्राएल के पवित्र परमेश्वर, जिसने तुझे चुना है, उसके कारण हाकिम झुकेंगे। मुझे लगता है कि यह एक और संकेत है, बल्कि एक संकेत से भी बढ़कर, तिरस्कृत और अस्वीकृत लोगों की बात है। वह हमें उन बातों के लिए तैयार कर रहा है जो हम आगे आने वाले सेवक गीतों में पढ़ने वाले हैं, जहाँ ध्यान पूरी तरह से पीड़ित सेवक पर केंद्रित है।

वह हमें इसके लिए तैयार कर रहा है। इस तथ्य के बावजूद कि राष्ट्रों ने तुम्हें तुच्छ जाना और अस्वीकार किया, लोगों ने तुम्हें अस्वीकार किया, और तुम शासकों के दास बन गए। सोचो, यीशु किस तरह हेरोदेस और पीलातुस वगैरह की दया पर निर्भर थे।

और भजन संहिता 2 में भी इसका जिक्र है, राष्ट्र परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह कर रहे हैं। लेकिन अंततः राजा देखेंगे, और वे आदर से भर जाएँगे, और राजकुमार झुकेंगे। और हम इसे चौथे सेवक गीत में घटित होते देखेंगे।

हम इसका और विस्तार से वर्णन तब देखेंगे जब राजा यह समझेंगे कि किसने सोचा होगा कि वह हमसे बड़ा होगा। और प्रभु यही कहते हैं: जब मैं अपनी कृपा दिखाने का निश्चय करूँगा, तब मैं तुम्हारी सहायता करूँगा। छुटकारे के दिन, मैं तुम्हारी सहायता करूँगा।

मैं तेरी रक्षा करूँगा और तुझे लोगों के लिए एक वाचा का मध्यस्थ बनाऊँगा। खैर, हमें वही भाषा मिली जो पहले गीत में इस्तेमाल हुई थी, लोगों की एक वाचा कि वे ज़मीन का पुनर्निर्माण करें और उजड़ी हुई ज़मीन को फिर से बाँटें। तो, इस खास संदर्भ में, मुझे लगता है कि ये लोग खास तौर पर याकूब इस्राएल हैं।

वे निर्वासित इज़राइल हैं, और वह उन्हें वापस अपनी ज़मीन पर लाकर उनकी उजड़ी हुई ज़मीन पर फिर से कब्ज़ा करने जा रहा है। यह एक ज़्यादा केंद्रित दृष्टिकोण है। लेकिन अब मैं जिस बात पर आपत्ति कर रहा हूँ, वह यह है कि इसे अध्याय 42 पर लागू किया जा रहा है, जो इतना विशिष्ट नहीं है।

यह लोगों के संदर्भ में ज़्यादा सामान्य है। इसलिए, परमेश्वर 42 में इन राष्ट्रों के साथ एक वाचा बाँधने जा रहा है, और यहाँ सेवक परमेश्वर के चुने हुए लोगों, इस्राएल याकूब, के लिए वाचा का मध्यस्थ बनने जा रहा है। वह एक नई वाचा की सेवकाई शुरू करने जा रहा है, और वह ऐसा अपने कष्टों के माध्यम से करेगा।

यह इस वाचा मध्यस्थता का एक हिस्सा होगा, और यह बहुत दिलचस्प है क्योंकि जैसे-जैसे आप गीतों के माध्यम से आगे बढ़ते हैं और सेवक की पीड़ा ध्यान में आती है। फिर आप यशायाह 55 पर आते हैं, और यशायाह 55 में, प्रभु लोगों से कहते हैं, " आओ, तुम जानते हो, खुलकर खाओ, खुलकर पियो। यह तुम्हारे लिए उपलब्ध है।"

दरअसल, आइए हम वहाँ जाकर इनमें से कुछ आयतें पढ़ें। यह वाचा के नवीनीकरण का आह्वान है, और यह सेवक गीतों के बाद आता है। यह सब यहीं ले जा रहा है।

तो, विस्मयादिबोधक। होई, यहाँ सकारात्मक रूप से प्रयुक्त हुआ है। अरे, तुम सब प्यासे हो, पानी के पास आओ।

जिनके पास पैसे नहीं हैं, आओ, खरीदो और खाओ। आओ, बिना पैसे और बिना दाम के दाखमधु और दूध खरीदो। तुम्हें जो चाहिए वो मेरे पास है, और वो मुफ्त है।

किसी ऐसी चीज़ के लिए पैसे क्यों खर्च करें जो आपको पोषण नहीं देगी? रूपक थोड़ा उलझा हुआ है, मुफ्त या खरीदें, लेकिन मेरी बात ध्यान से सुनो। मेरी बात पर ध्यान दो। सुनो ताकि तुम जी सको।

सुनो ताकि तुम जीवित रह सको। फिर मैं तुमसे एक बिना शर्त वाचा का वादा करूँगा, ठीक वैसे ही जैसे मैंने दाऊद से किए गए विश्वसनीय वाचा के वादे किए थे। तो, प्रभु वाचा के नवीनीकरण की बात कर रहे हैं, और फिर वे याद दिलाते हैं, " देखो, मैंने दाऊद को, राष्ट्रों के लिए एक साक्षी, राष्ट्रों का शासक और सेनापति बनाया है। "

देखो, तुम उन जातियों को बुलाओगे जिन्हें तुम पहले नहीं जानते थे, और मुझे लगता है कि प्रभु अभी भी यहाँ दाऊद से बात कर रहे हैं। यह एक उद्घरण है, लेकिन यह सेवक के काम को दर्शाता है। जो जातियाँ तुम्हें पहले नहीं जानती थीं, वे तुम्हारे पास दौड़ी आएंगी, क्योंकि तुम्हारे परमेश्वर यहोवा, इस्राएल के पवित्र परमेश्वर ने तुम्हें महिमा दी है।

और फिर नबी कहते हैं, प्रभु की खोज करो जब तक वह स्वयं उपलब्ध है। जब वह निकट हो, तो उसे पुकारो। दुष्टों को अपनी जीवनशैली, पापी लोगों को अपनी योजनाएँ त्याग देनी चाहिए।

उन्हें प्रभु के पास लौट आना चाहिए, और वह उन पर और उनके परमेश्वर पर दया करेगा, क्योंकि वह उन्हें दिल खोलकर क्षमा करेगा। भला, परमेश्वर किस आधार पर दया और क्षमा कर सकता है? यह सेवक गीत के बाद आता है। यह इस आधार पर है कि सेवक ने उनके लिए क्या किया है और उसने कितने कष्ट सहे हैं।

और फिर प्रसिद्ध श्लोक, " मेरी योजनाएँ तुम्हारी योजनाओं जैसी नहीं हैं, और मेरे कर्म तुम्हारे कर्मों जैसे नहीं हैं, प्रभु कहते हैं, जैसे आकाश पृथ्वी से ऊँचा है, वैसे ही मेरे कर्म तुम्हारे कर्मों से श्रेष्ठ हैं, और मेरी योजनाएँ तुम्हारी योजनाओं से श्रेष्ठ हैं।" इसका अर्थ ईश्वर की अज्ञेयता के संदर्भ में लगाया जाता है। हाँ, अगर आप इसे इसके संदर्भ से बाहर निकालें, तो यहाँ ईश्वर की योजना क्या है? उनकी योजना उन्हें बचाना, उन्हें क्षमा करना और उनका उद्धार करना है।

और अगर आप कुछ दूसरे ग्रंथों पर गौर करें, तो आप पाएँगे कि उनकी योजनाएँ पापपूर्ण हैं। मानवीय योजनाएँ पापपूर्ण हैं। मानवीय योजनाएँ साकार नहीं होतीं।

प्रभु की योजनाएँ साकार होती हैं। इसलिए, यह परमेश्वर की अज्ञेयता का कोई स्पष्ट उदाहरण नहीं है, और आप उनकी योजनाओं को समझ नहीं सकते, बल्कि वे हमारी योजनाओं से कहीं ऊँची हैं। नहीं, यह एक वादा है जो उनकी कही बातों का समर्थन करता है।

मैं तुम्हें माफ़ कर दूँगा, और तुम पर दया करूँगा। तुम ऐसा नहीं करोगे। तुम्हारी योजनाएँ विफल हो जाती हैं, लेकिन मेरे पास एक योजना है और वह तुम्हारी योजना से भी ऊँची है।

और फिर वह बारिश और बर्फ़ गिरने की बात करते हैं, और यह तब तक नहीं लौटती जब तक इसका उद्देश्य पूरा न हो जाए, और यही बात सुसमाचार प्रचार पर भी लागू होती है। और मुझे लगता है कि शायद यह पाठ को उसके संदर्भ से बाहर खींच रहा है। और प्रभु बस इतना कह रहे हैं, जब मैं अपना वादा भेजता हूँ, तो यह बारिश या बर्फ़ की तरह होता है।

यह हवा में रुककर वापस नहीं आएगा। यह जाएगा और उस उद्देश्य को पूरा करेगा जिसके लिए मैंने इसे भेजा था। तो, यशायाह 55 का एक संक्षिप्त अवलोकन, लेकिन मुझे लगता है कि यह महत्वपूर्ण है क्योंकि सेवक का काम परमेश्वर के लोगों को अपने पास वापस लाना है, और इसके लिए एक नई वाचा की स्थापना आवश्यक है।

और यिर्मयाह इसी पर आगे बढ़ेगा। वह उस नई वाचा के बारे में बात करेगा जो प्रभु अपने लोगों के साथ बाँधने वाला है। यह जेकेल इसके बारे में बात करता है।

प्रभु अपने लोगों को शुद्ध और क्षमा करेगा। और यह सब यशायाह से निकल रहा है, और यह सब यशायाह 53 और सेवक के कष्टों पर आधारित है, साथ ही दूसरे सेवक गीत में एक नई वाचा के वादे पर भी आधारित है। इसलिए अगर हम दूसरे सेवक गीत पर वापस जाएँ, तो वह लोगों के लिए एक वाचा मध्यस्थ होगा।

वह नई वाचा की मध्यस्थता करेगा। और 55 में, आपको उस वाचा को नवीनीकृत करने का आह्वान मिलेगा। वह भूमि का पुनर्निर्माण करेगा और उजाड़ पड़ी संपत्ति को पुनः आबंटित करेगा।

तू कैदियों से कहेगा, " बाहर निकल आओ । " और जो अँधेरी काल कोठरी में हैं, उनसे कहेगा, " बाहर निकल आओ ।" वे सड़कों के किनारे चरेंगे।

सभी ढलानों पर उन्हें चारागाह मिलेंगे। उन्हें भूख या प्यास नहीं लगेगी। सूरज की प्रचंड गर्मी उन पर नहीं पड़ेगी।

जो किसी पर दया करता है, उनका मार्गदर्शन करेगा। वह उन्हें जल के झरनों तक ले जाएगा। क्या यह किसी के जैसा लग रहा है? प्रभु अपने लोगों को छुड़ाने वाले हैं, और एक नेता होगा जो उन्हें जल के झरनों तक ले जाएगा, और वह एक तरह का भविष्यवक्ता होगा।

ह्यूजेनबर्गर नाम के एक विद्वान ने इस पर बहुत अच्छा काम लिखा है। प्रभु का सेवक एक नया मूसा है।

एक नया निर्गमन होगा जिसका वर्णन अगले अध्याय 51 में किया जाएगा। खैर, अगर आपके पास निर्गमन है, तो आपको मूसा का होना ज़रूरी है। अगर आपके पास निर्गमन पर बनी फ़िल्म है, तो चार्लटन हेस्टन का होना ज़रूरी है।

तो हाँ, यह सेवक एक नया मूसा बनेगा। वह लोगों को बाहर ले जाएगा। मैं अपने सारे पहाड़ों को एक सड़क बना दूँगा।

मैं अपने रास्ते बनाऊँगा। देखो, वे दूर से आ रहे हैं। देखो, कुछ लोग उत्तर और पश्चिम से आ रहे हैं, और कुछ लोग सीनै के देश से।

इस बार यह सिर्फ़ मिस्र से नहीं होगा। परमेश्वर के लोग यहाँ-वहाँ, हर जगह से आएँगे। हे आकाश, खुशी से चिल्लाओ।

हे पृथ्वी, आनन्द मना! पहाड़ जयजयकार करें। क्योंकि यहोवा अपनी प्रजा को शान्ति देता है, और दीन-दुखियों पर दया करता है।

तो एक मूसा होगा जो उन्हें बाहर ले जाएगा, उन्हें उस ज़मीन पर ले जाएगा। मूसा को उस ज़मीन में जाने का मौका नहीं मिला। इसलिए हम लगभग कह सकते हैं कि वह न सिर्फ़ एक नया मूसा है, बल्कि एक नया जोशुआ भी है, क्योंकि वह उन्हें उस ज़मीन पर ले जाएगा, ज़मीन का पुनः आवंटन करेगा और ज़मीन का पुनर्निर्माण करेगा।

और इसलिए मैं यहाँ हर जगह मूसा और यहोशू को देख रहा हूँ। और इसलिए सेवक यही करने वाला है। इसलिए उसकी एक भविष्यवक्ता वाली भूमिका है।

मूसा एक नबी थे। अगर हम यहोशू को भी इसमें शामिल करें, तो यहोशू एक योद्धा थे। लेकिन फिर भी वह एक राजा हैं।

वह अभी भी एक राजा है। और वह अपने लोगों को न्याय दिलाकर उन्हें मुक्ति दिला रहा है। पाप करने के बावजूद भी उन पर अत्याचार होते रहे हैं।

तो इस दूसरे गीत में सेवक की भूमिका बहुत अहम है। लेकिन मैं यह कहने से खुद को रोक नहीं पा रहा हूँ कि यह सिर्फ मूसा ही है या सिर्फ राजा ही है। यहाँ और भी बहुत कुछ है।

ये सब बातें हैं। और जैसा कि हम यीशु में देखते हैं, हाँ, मुझे एक नबी दिखाई देता है। वाह, मुझे एक नबी दिखाई देता है।

लेकिन एक ऐसा व्यक्ति जो नबी से भी बढ़कर है। मैं मसीहाई राजा को भी देखता हूँ। तो यही दूसरे सेवक गीत का सार है।

और मुझे लगता है कि यह एक अच्छा विराम बिंदु है। तो शायद हम यहीं रुकें। और अपने अगले व्याख्यान में, हम तीसरे सेवक गीत पर ध्यान देंगे।

और फिर हम चौथे गीत पर काफ़ी समय बिताएँगे।

यह डॉ. रॉबर्ट चिशोल्म और यशायाह के सेवक गीतों पर उनकी शिक्षाएँ हैं। यह सत्र 2 है, प्रभु का सेवक, न्याय का समर्थक और वाचा का मध्यस्थ, भाग ख। यशायाह 42:1-9 और यशायाह 49:1-3 का क्रम।